इकाई - III Date - 29.05.2020

Topic ⇒ विद्यालय में भाषा - भाषा माध्यम के रूप में।

इन दोनों उदाहरणों में मुख्य बात यह उभरकर आती है कि विभिन्न विषयों का अध्ययन करते समय भी हम एक प्रकार से भाषा भी सीख रहे होते हैं। हम जानते हैं कि विभिन्न विषयों की प्रकृति और अवधारणाएँ भिन्न होती हैं, अत: उन अवधारणाओं को संप्रेषित करने वाले शब्द या वे शब्द जो अवधारणाओं के साथ संचालित होते हैं और जिन्हें 'प्रयुक्ति' कहते हैं - भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए विज्ञान विषय में वायुमंडल, स्थलमंडल, जलमंडल, मृदा, प्रकाश संश्लेषण, पादप, बल, दहन, श्वसन, विकिरण आदि शब्द एक विशिष्ट अवधारणा से संबंध हैं। इसी प्रकार गणित विषय में त्रिभुज, आयतन, समीकरण, लम्ब, दंड आरेख आदि अवधारणाएँ एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होती हैं। जब बच्चे इन विषयों को पढ़ते हैं तो ये सभी शब्द बच्चों के शब्द भंडार का हिस्सा भी बनते हैं और बच्चे यह समझ विकसित करते हैं कि शब्द भिन्न संदर्भों में भिन्न अर्थ संप्रेषित करते हैं।

इतना ही नहीं विषयों की अध्ययन सामग्री पढ़ते समय बच्चे अनायास रूप से विभिन्न प्रकार की वाक्य संरचनाओं से भी परिचित होते चलते हैं। अगर आप इतिहास विषय की पाठ्य-पुस्तकों की भाषा पर गौर करें तो कह सकते हैं कि उनमें प्रयुक्त वाक्य संरचनाएँ प्राय: भूतकाल से संबंध होती हैं।

इस चर्चा से इतना तो स्पष्ट होता है कि बच्चों के सोचने-समझने का माध्यम भी भाषा ही होती है और अनुभवों के आधार पर वे ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में जो अवधारणाएँ बनाते हैं उसमें भाषा ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त यह भी समझना होगा कि भाषा पर पकड़ या भाषिक क्षमता अन्य विषयों को समझने में मदद करती है। बच्चे विभिन्न विषयों की अध्ययन सामग्री को तभी बेहतर तरीके से समझ सकेंगे जब भाषा की विभिन्न कुशलताओं में दक्ष होंगे। उदाहरण के लिए पर्यावरण अध्ययन में 'वन- संरक्षण या प्रदूषण' विषय पर शिक्षक और बच्चों के बीच होने वाले संवाद का माध्यम भी एक भाषा ही है। जब बच्चे विषय की पाठ्य-पुस्तक पढ़ते हैं और अपने विचार लिखकर प्रकट करते हैं तो पढ़ने - लिखने की कुशलता विकसित हो रही होती है। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि पठन और लेखन की कुशलता ही विषय की सामग्री को पढ़कर समझने और लिखित अभिव्यक्ति मदद करती है।

END

Scanned with CamScan